UGC CARE LISTED
ISSN No.2394-5990

संशोधक

• वर्ष : ९१ • डिसेंबर २०२३ • पुरवणी विशेषांक ०६

स्थापना : ९ जानेवारी १९२७

प्रकाशक : इतिहासाचार्य वि.का.राजवाडे संशोधन मंडळ,धुळे

22. 'विश्वज्योति बापू' खंडकाव्य में चित्रित विश्वशांति का संदेश

- डॉ. युवराज माने ---------- 85

23. विश्वशांति और विकास में महेंद्र भटनागर की कविताओं का योगदान
(कविता –गंगा खंड दो के संदर्भ में)

- डॉ. हेमलता काटे ---------- 88

24. विश्वशांति एवं विकास में हिंदी साहित्य का योगदान

- डॉ. भूपेंद्र सर्जेराव निकाळजे ---------- 92

25. विश्वशांति: भारतीय संस्कृति का मूलाधार (कमलेश्वर के उपन्यासों के आधारपर)

- प्रो. डॉ. अनुप दळवी ---------- 97

26. हिंदी गजलों में व्यक्त शांति, प्रेम और सदभाव की भावना

- प्रा. मारुती दत्तात्रय नायकू ---------- 100

27. विश्व शांति एंव विकास में हिंदी साहित्यकारों का योगदान

- डॉ. बेबी श्रीमंत खिलारे ---------- 105

28. सांप्रदायिकता की दाहकता में शांति और भाईचारा का संदेश देता 'जख्म हमारे'

- सुशील अशोक हुपरीकर ---------- 108

29. विश्वशांति और विकास में हिंदी काव्य का योगदान 'राष्ट्रसंत तुकडोजी के संदर्भ में'

- डॉ.अलका निकम–वागदरे ---------- 111

30. विश्वशांति एवं विकास में संस्कृति का योगदान

- प्रो. अनिल अर्जुन अहिवले ---------- 114

31. विश्व शांति और विकास में हिंदी साहित्य की भुमिका

- डॉ. शहाजी शामराव जाधव ---------- 117

32. विश्वशांति एवं विकास में समकालीन ग़ज़ल साहित्य का योगदान

- प्रा. श्रीमति मुल्ला राबन खुदाबक्ष ---------- 120

विश्वशांति और विकास में महेंद्र भटनागर की कविताओं का योगदान

(कविता –गंगा खंड दो के संदर्भ में)

डॉ. हेमलता काटे
हिंदी विभाग,
बाळासाहेब देसाई कॉलेज, पाटण
Mail ID : hemlatakate@yahoo.in
फोन नं. 9096143412

शोध सार :

नालंदा विशाल शब्दसागर शब्दकोश में 'विश्व' का एक अर्थ जीवात्मा है। जीवात्मा अगर शांत रहता, तो अपने आप संसार में भी शांति रहती है। अत: विश्वशांति एक मूल्य के भान्ति महत्व रखती है। यह एक ऐसा मूल्य है, जो मनुष्य को संघर्ष से दूर रख शांति से जीने का संदेश देता है। और शांति में मनुष्य को आत्म परीक्षण करने का मौका मिलता है। जब मनुष्य अर्थात जीवात्मा को आत्मबोध होता है, तब विश्व शांति का विकास होता है। यही आत्मबोध कराने का प्रयास महेंद्र भटनागर की कविताएं करती नजर आती है।

शोधा–लेख :

विश्वशांति ऐसा मूल्य है, जो पूरे संसार के इन्सान को सुख–समाधान से जीने का संदेश देता है। कारण इसमें शांति एक ऐसा विचार है, जो संघर्ष से दूर कर मनुष्य के मन को स्थिरता प्रदान करता है। जब मन स्थिर होता है, तब निश्चित रूप इन्सान उचित निर्णय ले सकता है। मनुष्य अगर शांति से निर्णय लेता है, तब अपने आप अपने साथ समाज में भी शांति निर्माण करता है। मनुष्य में मानवता की भावना का विकास होता है। ''रिचार्ड एंड्रियामंजातो के शब्दों में मवह मानवता की सर्वोच्च चेतना की अभिव्यक्ति है। वह सार्वजनिन मानव मूल्यों की प्रतिष्ठा के लिए किए गए कार्यों में रूपायित होती है। प्रबुद्ध विश्लेषण और ऐसी सुचिंतित सक्रियता में वह अपनी समर्थ अभिव्यक्ति पाती है। जो मानव जाति को विध्वंश से बचाती है और एक ऐसे समाज का प्रवर्तन करती है जो शोषण और दमन से मुक्त हो।''[1]

विश्वशांति में दो शब्द हैं विश्व और शांति। विश्व का अर्थ समस्त संसार है, ''नालंदा विशाल शब्द कोश में 'विश्व' के और भी अर्थ मिलते हैं, जिसमें प्रमुखता से 'देह', शरीर, 'जीवात्मा' को ले सकते है।''[2] इसी शब्द कोश में 'शांति' के भी विभिन्न अर्थ मिलते हैं, ''जैसे– 'मन की वह अवस्था जिसमें क्षोभ, चिंता, दु:ख आदि से रहित रहता हैं।', 'चित्त की स्वस्थता', वेग, गति, क्रिया आदि का अभाव, 'निश्चलता', 'चीख–पुकार या हो–हल्ला का अभाव', 'युद्ध, मारकाट आदि का अभाव', बाधा अमंगल आदि दूर करनेवाला धार्मिक उपचार।''[3] विश्वशांति यानी जीवात्मा की शांति अर्थात पूरे संसार में शांति। इसपर आधारित विश्वशान्ति को इस प्रकार परिभाषित कर सकते है कि जब जीवात्मा अर्थात देह क्षोभ, चिंता और दु:ख तथा युद्ध, मारकाट जैसे हिंसक प्रवृत्ति से दूर होकर, चित्त की स्वस्थता प्राप्त करता है और पूरे विश्व या अपने जीवात्मा में सद्भावना या मैत्री का निर्माण करता है, तब उसे विश्व शांति कह सकते है। एक प्रकार से विश्वशान्ति एक मूल्य है, जो जीवात्मा को इस जीवन के वास्तविकता का एहसास करता है। वास्तविकता है की मनुष्य का जीवन अस्थिर ही है, आज है तो कल नहीं है। इस अस्थिरता की पहचान इस मूल्य में मिलती है। 'विश्वशांति यानी जीवात्मा की शांति अर्थात पूरे संसार में शांति।' इसीलिए संसार में विश्वशान्ति लानी है तो प्रत्येक मनुष्य को शांति का यह धर्म पहचानना है।

शांति का धर्म दांते इसप्रकार समझाते है, मनुष्य के पृथक–पृथक अंगों से मनुष्य की गणना नहीं होती। परन्तु सब अंगों के मिल जाने से वह मनुष्य कहलाता है केवल कान या हाथ या आँख या पाँव से ही किसी को मनुष्य नहीं कहा जा सकता परन्तु सब अंगों के मिलने से जो ढाँचा बन जाता है, उसे मनुष्य कहते हैं और जब सब अंग अपना निश्चित कार्य विवेक से निर्देशन लेकर करते हैं तब सम्पूर्ण मनुष्य का ज्ञान होता हैं। मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जिसमें विवेक है और इस कारण वह किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए कार्य करता है। इसी प्रकार मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण एक राज्य में रहकर उसका एक अंग बन जाता हैं, जब राज्य के अंग अर्थात् उसके नागरिक सुखी जीवन प्राप्त करने के उद्देश्य से अपना–अपना